The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

भारतीय लोककथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों के विकास पर एक अध्ययन

Dr. Dineshchandra Mali

PRINCIPAL, Smt. Dhariniben A.shukla B.Ed. College, Mahemdabad, Dist-Kheda (Gujarat)

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17130133

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 26-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

लोककथाएँ, संवैधानिक, समानता, स्वतंत्रता, सहिष्णुता, भूमिका निर्वाह

ABSTRACT

शिक्षा का लक्ष्य व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास कर उसे समाज का समर्थ एवं योग्य नागरिक बनाना है। जिस समाज या देश के नागरिक जितने अधिक मूल्यवान होंगे, वह देश उतना ही उन्नतिशील होगा। भारत में 42वें संविधान संशोधन के बाद जिस रूप में उद्देशिका इस समय हमारे संविधान में उपलब्ध है, उसके अनुसार संविधान निर्माता सर्वोच्च एवं मूलभूत संवैधानिक मूल्यों में विश्वास रखते थे। वे चाहते थे कि भारत गणराज्य के जन–जन के मन में इन मूल्यों के प्रति आस्था, प्रतिबद्धता जगे तथा आने वाली पीड़ियाँ जिन्हें यह संविधान आगे चलाना होगा, इन मूल्यों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सके। वर्तमान में शिक्षा के बदलते परिवेश में महत्त्वपूर्ण अन्तर आ रहे हैं और इसका सीधा प्रभाव समाज और देश पर पड़ रहा है। आज लोगों में सामाजिकता का अभाव है। एक दूसरे के प्रति ईर्ष्या भावना पनप रही है। व्यक्ति स्वार्थी एवं लालची बनते जा रहे हैं। उनमें जीवन मूल्यों का लोप होता जा रहा हैं। लोग मर्यादापूर्ण जीवन भूलते जा रहे है। ऐसे समय में शिक्षा के ढाँचे को मूल्य से परिपूर्ण बनाने की आवश्यकता है। शिक्षा इस प्रकार की हो जो बालक को संस्कारित करे, बालक में जीवन मूल्यों का विकास करें ताकि बालक आगे जाकर समाज का अच्छा नागरिक बन सके। वह देश एवं समाज के लिए कुछ कर सकें। मूल्यपरक शिक्षा की आज जितनी आवश्यकता अनुभव की जा रही उतनी पहले कभी नहीं। आज हम एक गहन संक्रान्ति काल से गुजर रहें है। हमारे प्राचीन परम्परागत एवं संवैधानिक मूल्य विघटित होते जा रहे हैं। आज सदाचार, प्रेम, भाईचारा, देशभक्ति सत्य अहिंसा, प्रेम, शान्ति, स्वतंत्रता, न्याय, सहिष्णुता, समानता, पंथ निरपेक्षता जैसे– संवैधानिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की महत्ती आवश्यकता है। ये मूल्य न केवल उत्थान के लिए अपितु सामाजिक–राष्ट्रीय प्रगति एवं शान्ति के लिए परम आवश्यक है। कथा साहित्य

का इतिहास उतना ही पुराना है जितनी मानव सभ्यता हमारी सांस्कृतिक धरोहर इतनी सम्पन्न एवं प्राचीन रही है कि अनेक विश्व प्रसिद्ध कथा कहानियों की जन्मभूमि भारत ही रहा है। पहले दादा–दादी या नाना–नानी बच्चों को जो कथा कहानियाँ सुनाया करते थे वे नैतिकता, सद्भाव, शान्ति, प्रेम, सत्यता, परोपकार, न्याय, सहिष्णुता, साहस, सहयोग, करूणा भलाई, समानता, स्वतंत्रता आदि कई मूल्यों से भरपूर होती थी। कहानियाँ सुनकर बच्चे कुछ वैसा ही करने की प्रेरणा पाते थे जैसा कि किस्से कहानियों का नायक किया करता था किन्तु वर्तमान समय की परस्थितियाँ कुछ अलग तरह की है। अतः समाज में विविध जीवन मूल्यों का विकास शिक्षण व्यवस्था के द्वारा किया जा सकता है और लोककथाओं के शिक्षण द्वारा इन मूल्यों का विकास किया जाना संभव है। इस प्रकार शोधकर्ता उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर इस शोधकार्य हेतु प्रेरित हुआ।

प्रस्तावना

मानव समाज में आदिकाल से ही लोककथाएँ प्रचलित है। हमारे लोक जीवन में अनेक लोककथाएँ बिखरी पड़ी है। जीवन में संचित अनुभवों को प्रतीक के माध्यम से इन लोककथाओं को व्यक्त किया जाता है। इनका निर्माण कब, कहाँ, कैसे और किसके द्वारा हुआ यह बताना असंभव है। पर यह बात आवश्यक है कि ये अपनी सार्थकता एवं व्यापकता के कारण जनमानस का संस्कार बन चुकी है। इन कथाओं की रोचक प्रस्तुती ही इन्हें जीवन्त बनाती है एवं समाज में मूल्यों का संचार करती है।

बालकों के मन पर कहानी का अमीट प्रभाव पड़ता है। वे कहानियाँ सुनने में अधिक रुचि लेते हैं। हमारी संस्कृति, हमारे इतिहास तथा वातावरण में अनेक कथानक ऐसे है, जिन्हें संजोकर कथा कहानियाँ बनाई जा सकती है। फिर उनके माध्यम से स्वतंत्रता, समानता, न्याय भ्रातृत्व एवं सहनशीलता जैसे संवैधानिक मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है। ग्रामीण जीवन में प्रचलित इन लोककथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में ये मूल्य विकसित किये जा सकते हैं।

लोककथाओं का जन्म उस समय से माना जा सकता है जब मनुष्य ने अपनी कल्पनाओं एवं अनुभवों को कथात्मक रूप में कहना शुरु किया। लोककथाएँ लोकसाहित्य का अभिन्न अंग है। हिन्दी में लोकसाहित्य शब्द अंग्रेजी के 'फोकलोर' के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी में फोकलेर शब्द का प्रयोग सन् 1887 ई. में अंग्रेज विद्वान सर थॉमस ने किया था। इससे पूर्व लोकसाहित्य तथा अन्य लोकविधाओं के लिए 'पोपुलर एन्टीक्वीटीज़' शब्द का प्रयोग किया जाता था। भारत में लोकसाहित्य का संकलन एवं अध्ययन 18वीं शती के उत्तरार्द्ध में उस समय हुआ जब 1784 ई. में कलकत्ता हाईकोर्ट के तत्कालीन न्यायाधीश सर विलियम जोंस ने 'रायल एशियाटिक सोसाइटी'

नामक संस्था की स्थापना की। इस संस्था के द्वारा एक पत्रिका प्रकाशन आरंभ किया गया, जिसमें भारतीय लोककथाओं एवं लोकगीतों को स्थान दिया गया।

मूल्य मानव जीवन की सार्थकता है, उनका धर्म है एवं उनका अस्तित्व है। मूल्यों का ज्ञान एवं आचरण हमारे लिए आवश्यक है। हमारे लिए मूल्यों का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं बल्कि मूल्यों को आचरण में लाना अधिक महत्त्वपूर्ण है, जीवन की सार्थकता को खोजकर उसको प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है। मूल्य जीवन के अंतिम लक्ष्य होते हैं। इसलिए शिक्षा मूल्य परक होनी आवश्यक है।

शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोधकार्य के निम्न उद्देश्य हैं –

(i) संविधान में निहित मूल्यों पर आधारित लोककथाओं का पता लगाना।

(ii) लोककथाओं के शिक्षण हेतु पाठ योजनाएँ तैयार करना।

(iii) लोककथा आधारित प्रायोगिक शिक्षण कार्य करके मूल्य संवर्धन के संदर्भ में छात्रों पर इसकी प्रभावशीलता का पता लगाना।

(iv) लोककथा आधारित प्रायोगिक शिक्षण कार्य करके मूल्य संवर्धन के संदर्भ में छात्राओं पर इसकी प्रभावशीलता का पता लगाना।

(v) प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरूप छात्र एवं छात्राओं में मूल्य संवर्धन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(vi) शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत करना।

शून्य परिकल्पनाएँ

(i) छात्रों एवं छात्राओं के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्यमान में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध अध्ययन, विधि एवं उपकरण

विधि एवं उपकरण अनुसंधानरूपी भवन की महत्त्वपूर्ण नींव है जिनकी उपस्थिति में अनुसंधानकर्ता अपने शोध सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण कार्य करता है। शोधकार्य को विधिवत सम्पन्न करने के लिए ऐसे उपकरण एवं विधियों का चुनाव किया जाता है जो अधिक वैज्ञानिक होने के साथ वैध हो, इससे निष्कर्ष सत्य एवं विश्वसनीय होते हैं। अनुसंधान के इस पक्ष द्वारा शोधकर्ता अपने निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करता है।

शोध विधि

इस शोधकार्य में निम्नलिखित दो विधियाँ उपयोग में ली गई।

(1) आदर्शमूलक सर्वेक्षण विधि

इस शोधकार्य में कक्षा 5, 6 एवं 7 आयुवर्ग के विद्यार्थियों का लोककथाओं के माध्यम से मूल्य संवर्धन करने के लिए संवैधानिक मूल्यों– स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, न्याय एवं सहनशीलता पर आधारित लोककथाओं के चयन में आदर्शमूलक सर्वेक्षण का उपयोग किया गया।

(2) प्रायोगिक शोध विधि

पूर्व एवं पश्च परीक्षण प्रायोगिक एकल समूह आकल्प ;च्तम ंदक च्वेज जमेज ैपदहसम हतवनच मगचमतपउमदजंस कमेपहदद्ध

इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य लोककथाओं पर आधारित शिक्षण कार्य करके मूल्य संवर्धन के संदर्भ में विद्यार्थियों पर इसकी प्रभावशीलता का पता लगाना था। किसी भी नवीन उपागम का शिक्षण में प्रभाव का पता लगाने के लिए प्रायोगिक शोध विधि का उपयोग किया जाता है। अतः इस शोधकार्य में प्रायोगिक शोध विधि उपयोग में ली गई।

इस प्रायोगिक कार्य में पूर्व एवं पश्च परीक्षण प्रायोगिक आकल्प का चयन किया गया क्योंकि इस प्रायोगिक शोधकार्य के माध्यम से यह पता लगाना था कि प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के प्राप्तांकों के मध्य सार्थक अन्तर आ सकता है। इसी कारण इस शोधकार्य में इस शोध आकल्प का चयन किया गया।

उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य में निम्नलिखित स्वनिर्मित उपकरणों का निर्माण एवं उपयोग किया गया–

(1) मूल्य आधारित पूर्व एवं पश्च परीक्षण

इस शोधकार्य का उद्देश्य संवैधानिक मूल्यों के संवर्धन के संदर्भ में छात्र–छात्राओं पर उसकी प्रभावशीलता का पता लगाना था। इस हेतु मूल्य प्रमापनी प्रश्नावली का निर्माण किया गया।

(2) भूमिका निर्वाह विधि पर लोककथा आधारित 25 पाठ योजनाएँ

शोधकार्य के अध्ययन हेतु संवैधानिक मूल्यों पर आधारित लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा शिक्षण कार्य करवाया गया इस हेतु भूमिका निर्वाह विधि पर आधारित 25 पाठ योजनाओं का निर्माण शोधकर्ता द्वारा किया गयज्ञं

साँख्यिकीय प्रविधि

इस शोधकार्य के अध्ययन हेतु निम्नलिखित सांख्यिकीय प्रविधियों का उपयोग किया गया–

1. प्रतिशत
2. मध्यमान

3. मानक विचलन

4. 'ज' परीक्षण

न्यादर्श एवं परिसीमन

इस प्रायोगिक शोधकार्य को पूर्ण करने के लिए उदयपुर शहर के प्रभात सीनियर सैकण्डरी स्कूल के कक्षा 5, 6 एवं 7 के समस्त विद्यार्थियों में से सोद्देश्य प्रतिचयन विधि ;च्नतचवेपअम ेंउचसपदह उमजीवकद्ध द्वारा 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया। चयनित विद्यार्थियों के दो समूह बनाए गए जो निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

प्रायोगिक समूह	छात्र	छात्राएँ	कुल न्यादर्श
1	50	50	100

चयनित विद्यार्थियों के दो समूह जिसमें 50 छात्रों तथा 50 छात्रों का चयन किया गया। इस प्रकार कुल 100 विद्यार्थियों (50 + 50) का एक ही प्रायोगिक समूह बनाया गया।

प्रायोगिक समूह पर पूर्व परीक्षण प्रशासित किया गया और उसके बाद मूल्यों पर आधारित शिक्षण कार्य किया गया। प्रायोगिक कार्य (शिक्षण) के पश्चात् प्रायोगिक समूह का पश्च परीक्षण किया गया। जिसे निम्नलिखित सारणी द्वारा समझा जा सकता है–

समूह	पूर्व परीक्षण	शिक्षण	पश्च परीक्षण
प्रायोगिक समूह	√	लोककथा आधारित संवैधानिक मूल्य शिक्षण	√

प्रायोगिक शोध प्रक्रिया

शोधकर्ता के इस संपूर्ण शोधकार्य को इस शोध प्रक्रिया द्वारा समझा जा सकता है। सर्वप्रथम शोधकर्ता ने संवैधानिक मूल्यों पर आधारित लोककथाओं का चयन कर संकलन किया गया। वे संवैधानिक मूल्य थे– स्वतंत्रता, समानता, भ्रातृत्व, सहनशीलता एवं न्याय। प्रत्येक मूल्य पर पाँच लोककथाओं का चयन किया गया। इस प्रकार कुल 25 लोककथाओं का चयन शोधकर्ता द्वारा किया गया। यह कार्य पूर्ण होने के बाद शोधकार्य में भूमिका निर्वाह विधि पर आधारित प्रत्येक कथा पर एक पाठ योजना का निर्माण किया गया अतः कुल 25 पाठ योजनाएँ तैयार की।

पाठ योजनाओं के निर्माण के पश्चात् पाँचों मूल्यों पर आधारित पूर्व एवं पश्च परीक्षणों का निर्माण किया गया। इसके पश्चात् सोद्देश्य प्रतिचयन विधि द्वारा उदयपुर क्षेत्र के एक विद्यालय का चयन किया गया। इसमें कक्षा 5, 6 एवं 7 आयुवर्ग के 50 छात्रों एवं 50 छात्राओं का चयन किया गया। पूर्व एवं पश्च परीक्षण एक ही था और यह संस्थितियों पर आधारित था।

न्यादर्श चयन के बाद प्रायोगिक समूह का पूर्व परीक्षण किया गया। इसके बाद समूह को भूमिका निर्वाह विधि द्वारा लोककथाओं पर आधारित शिक्षण कार्य कराया गया। शिक्षण कार्य के बाद पश्च परीक्षण किया गया। प्राप्त दत्तों के आधार पर परिणामों का उद्देश्यानुसार विश्लेषण किया गया।

भारतीय लोककथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों के विकास की प्रभावशीलता के प्रमुख निष्कर्ष

लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा छात्र एवं छात्राओं में मूल्यों की प्रभावशीलता का पता लगाने के लिए मानक विचलन एवं सह–सम्बन्धित मध्यमान आधारित 'टी' परीक्षण के माध्यम से दत्त विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण के उपरान्त निम्नलिखित आधारों पर प्रमुख निष्कर्ष निकाले गए–

1 छात्रों में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के कुल प्राप्तांकों के आधार पर निष्कर्ष

छात्रों में लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा मूल्य संवर्धन के लिए प्रायोगिक समूह के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के कुल प्राप्तांकों के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जिसके परिणामस्वरूप निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

(i) छात्रों में प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 18.40 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.984 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

क्षेत्रवार निष्कर्ष

छात्रों में लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा पाँच संवैधानिक मूल्यों यथा न्याय, समानता, सहनशीलता, भ्रातृत्व एवं स्वतंत्रता की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया जिसके पूर्व एवं पश्च परीक्षण के कुल प्राप्तांकों के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जिसके परिणामस्वरूप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

(1) न्याय

छात्रों में न्याय मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 6.61 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.984 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(2) समानता

छात्रों में समानता मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 7.38 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.984 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(3) सहनशीलता

छात्रों में सहनशीलता मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 8.54 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.984 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(4) भ्रातृत्व

छात्रों में भ्रातृत्व मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 9.96 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.984 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(5) स्वतंत्रता

छात्रों में स्वतंत्रता मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 10.84 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

छात्राओं में पूर्व एवं पश्च परीक्षण कुल प्राप्तांकों के आधार पर निष्कर्ष

छात्राओं में लोककथाओ के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा मूल्य संवर्धन के लिए प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के कुल प्राप्तांकों के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जिसके परिणामस्वरूप निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए–

छात्राओं के समग्र प्राप्तांकों के आधार पर प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 11.10 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

क्षेत्रवार निष्कर्ष

छात्राओं में लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा पाँच संवैधानिक मूल्यों यथा न्याय, समानता, सहनशीलता, भ्रातृत्व एवं स्वतंत्रता की प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया जिसके पूर्व एवं पश्च परीक्षण प्राप्तांकों के आधार पर सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया जिसके परिणामस्वरूप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुए–

(1) न्याय

छात्राओं में न्याय मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 5.86 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.984 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(2) समानता

छात्राओं में समानता मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 4.52 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.984 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(3) सहनशीलता

छात्राओं में सहनशीलता मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 5. 35 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्रों के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(4) भ्रातृत्व

छात्राओं में भ्रातृत्व मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 8.56 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

(5) स्वतंत्रता

छात्राओं में स्वतंत्रता मूल्य पर आधारित प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 9.44 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.98 एवं .01 स्तर पर 2.626) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि छात्राओं में पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

छात्र एवं छात्राओं में भारतीय लोककथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों में संवैधानिक मूल्यों के विकास की प्रभावशीलता के निष्कर्ष

छात्र एवं छात्राओं में लोककथाओं के माध्यम से मूल्य संवर्धन में प्रायोगिक शिक्षण के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य 'टी' मान 90.95 प्राप्त हुआ जो कि सारणी मान (.05 स्तर पर 1.97 एवं .01 स्तर पर 2.60) से अधिक है। अतः स्पष्ट है कि समग्र छात्र एवं छात्राओं के पूर्व एवं पश्च परीक्षण के मध्य सार्थक अन्तर है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोधकार्य में लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा पाँच संवैधानिक मूल्यों (न्याय, समानता, सहनशीलता, भ्रातृत्व एवं स्वतंत्रता) का विकास करने के लिए प्रायोगिक शिक्षण कार्य किया गया।

इस प्रायोगिक शोधकार्य में सर्वप्रथम संवैधानिक मूल्यों पर आधारित संस्थितियों द्वारा पूर्व परीक्षण किया गया। तत्पश्चात् मूल्यों पर आधारित लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा प्रायोगिक शिक्षण कार्य किया गया। दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या से स्पष्ट होता है कि लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा जो प्रायोगिक शिक्षण कार्य किया गया। उसमें विद्यार्थियों ने रूचिपूर्वक लोककथाओं को सुना और पाठ्यवस्तु का शिक्षण भूमिका निर्वाह विधि द्वारा किया गया। इससे विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित हो सका तथा विद्यार्थियों ने लोककथाओं को सुनने में अधिक रूचि ली। लोककथाओं में निहित मूल्यों का पहले से अधिक विकास हुआ। यह पश्च परीक्षण के परिणामस्वरूप ज्ञात हुआ।

इसका शैक्षिक निहितार्थ यह है कि लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा शिक्षण कार्य करवाया जाय तो शिक्षण अर्थपूर्ण, प्रभावी रुचिकर तो बनता, साथ ही विद्यार्थियों में लोककथाओं में निहित मूल्यों का विकास भी होता है। पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं पाठ्यक्रम निर्माण अभिकरणों ;छब्म्त्ज्ए ैप्त्ज्द्ध के लिए यह एक ध्यातव्य एवं महत्वपूर्ण बिन्दु है।

प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थ इस प्रकार हैं–

(i) विद्यार्थी लोककथाओ को सुनने में रूचि रखते हैं तथा विद्यार्थी स्वयं कहानी के पात्रों की भूमिका का निर्वाह करते हैं तो सभी विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित रहता है और उनमें एकाग्रता की वृद्धि होती है।

(ii) लोककथाओ के शिक्षण कार्य से विद्यार्थी सक्रिय रहते हैं तथा पाठ्यवस्तु को ध्यान से सुनते जिससे विषयवस्तु अच्छी तरह से याद रह जाती है।

(iii) लोककथाओं के प्रायोगिक शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में मनन एवं चिन्तन शक्ति का विकास होता है।

(iv) लोककथाओ के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरूप विद्यार्थी मूल्यों से ओपप्रोत पाठ्यवस्तु से परिचित होते हैं जिससे विद्यार्थियों में सही एवं गलत, अच्छा एवं बुरा का ज्ञान होता है।

(v) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण से विद्यार्थियों के एक दिन पहले पाठ्यवस्तु के संवाद याद करने को दिये जाते हैं। वे लोककथा आधारित पाठ्यवस्तु में रूचि रखते हैं जिससे उन्हें संवाद जल्दी से याद हो जाते हैं। इस प्रकार वे अन्य पाठ्यपुस्तक में भी रूचि लेने लगते हैं।

(vi) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण से विद्यार्थियों में निर्णय क्षमता का विकास होता है।

(vii) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरूप विद्यार्थी जातिगत, ऊँच–नीच, गरीबी–अमीरी एवं धार्मिक भेदभाव की भावना से दूर रहकर समानता का व्यवहार करना सीखते हैं।

(viii) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण से विद्यार्थी छोटी–छोटी बातों के लिए भावुक नहीं होते हैं, उनमें लोककथाओं की पाठ्यवस्तु से सहनशीलता की भावना का विकास होता है।

(ix) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरूप कथाओं में निहित मूल्यों को अपने व्यवहार मे लाने का प्रयास करते हैं। विद्यार्थी अन्य विद्यार्थियों के साथ भाई जैसा व्यवहार करते हैं।

(x) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरूप प्रजातांत्रिक भावनाओं का विकास होता है।

(xi) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में अपने सांस्कृतिक गौरव की भावना का विकास होता है एवं सांस्कृतिक मूल्य विकसित होते हैं।

(xii) लोककथाओं के माध्यम से प्रायोगिक शिक्षण के फलस्वरूप विद्यार्थियों में पारिवारिक मूल्यों का विकास होता है। वे परिवार में बड़ों के प्रति सम्मान करना सीखते है। उनमें अपनत्व की भावना का विकास होता है। परिवार के सदस्यों के प्रति संवेदनशीलता का विकास होता है जिससे परिवार मजबूत होता है।

(xiii) यह प्रायोगिक शिक्षण भूमिका निर्वाह विधि पर आधारित है। लोककथाओं में आने वाले पात्रों का विद्यार्थी अभिनय करते हैं, इससे विद्यार्थियों की पाठ्यवस्तु में रुचि जागृत होती है। साथ ही उनमें अभिनय करने की क्षमता का विकास होता है।

(xiv) इस प्रायोगिक शिक्षण में विद्यार्थी संवादों को याद कर अन्य विद्यार्थियों के सामने अभिनय करते हैं, इससे उनमें आत्मविश्वास जागृत होता है।

(xv) लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा शिक्षण से विद्यार्थियों में चिन्तन–मनन शक्ति का विकास होता है। जिससे उनमें कई तरह के व्यावहारिक ज्ञान का विकास होता है और वे विभिन्न परिस्थितियों में उचित निर्णय ले सकते हैं।

(xvi) लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा विद्यार्थी पात्रों की भूमिका का निर्वाह करते हैं जिससे उनमें सम्प्रेषण कौशल का विकास होता है।

(xvii) विभिन्न प्रकार की सामाजिक संस्थाए जो विशेष रूप से छोटे बालकों से जुड़ी हुई है। वे लोककथाओं के माध्यम से बालको में व्यांवहारिक ज्ञान में वृद्धि कर सकती है तथा बालकों को बचपन में ही इस प्रकार की शिक्षा देकर उन्हें संस्कारित कर सकती है। उनमें योग्य मूल्यों का विकास कर सकती है।

(xviii) विभिन्न प्रकार की शिक्षक–प्रशिक्षण संस्थाओं को लोककथाओं के माध्यम से एवं इसकी शिक्षण प्रक्रिया से अवगत होना चाहिए। शिक्षक–प्रशिक्षक अपने प्रशिक्षणार्थियों को इस विधि पर आधारित पाठ–योजनाओं का निर्माण कर मूल्य शिक्षा में सकारात्मक परिवर्तन कर सकते हैं।

(xix) पाठ्यक्रम निर्माण करने वाले अभिकरणों राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान ;प्म्त्ज्द्ध एवं राष्ट्रीय शैक्षिक अनुंसधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ;छब्म्त्ज्द्ध को यह शोधकार्य सुझाव प्रदान करता है कि वर्तमान परिस्थितियों को ध्यान में रखकर विद्यार्थियों में मूल्यों का विकास करने हेतु लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा जिन विषयों में संभव हो हो व्यावहारिक जीवन पर मूल्य आधारित मूल्यांकन किया जाए तो छात्रों में निश्चित रूप से मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि मूल्यों के विकास में प्रभावी है और बहुत से शैक्षिक निहितार्थ समाहित किए हुए हैं

भावी शोध हेतु सुझाव

लोककथाओं के माध्यम से भविष्य में निम्नलिखित विषयों पर शोधकार्य किया जा सकता है–

(i) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों में लोककथाओं के माध्यम से मूल्य संवर्धन।

(ii) लोककथाओं के माध्यम से सामाजिक मूल्यों का संवर्धन।

(iii) लोककथाओं के माध्यम से विडियो क्लिप या पिक्चर द्वारा मूल्य संवर्धन की प्रभावशीलता का अध्ययन।

(iv) शिक्षण की अन्य विधियों द्वारा लोककथाओं के माध्यम से मूल्यों का विकास।

(v) लोककथाओं के माध्यम से संविधान के अन्य मूल्यों का संवर्धन।

(vi) लोककथाओं के माध्यम से विद्यार्थियों के मूल्यों के विकास में अन्य विधियों की प्रभावशीलता का अध्ययन।

(vii) प्रस्तुत शोधकार्य को व्यापक स्तर पर व्यापक न्यादर्श के साथ पुनः किया जा सकता है।

उपसंहार

प्रस्तुत शोधकार्य में लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा पाँच संवैधानिक मूल्यों (न्याय, समानता, सहनशीलता, भ्रातृत्व एवं स्वतंत्रता) का विकास करने के लिए प्रायोगिक शिक्षण कार्य किया गया।

इस प्रायोगिक शोधकार्य में सर्वप्रथम संवैधानिक मूल्यों पर आधारित संस्थितियों द्वारा पूर्व परीक्षण किया गया। तत्पश्चात् मूल्यों पर आधारित लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा प्रायोगिक शिक्षण कार्य किया गया। दत्त विश्लेषण एवं व्याख्या से स्पष्ट होता है कि लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा जो प्रायोगिक शिक्षण कार्य किया गया। उसमें विद्यार्थियों ने रूचिपूर्वक लोककथाओं को सुना और पाठ्यवस्तु का शिक्षण भूमिका निर्वाह विधि द्वारा किया गया। इससे विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित हो सका तथा विद्यार्थियों ने लोककथाओं को सुनने में अधिक रूचि ली। लोककथाओं में निहित मूल्यों का पहले से अधिक विकास हुआ। यह पश्च परीक्षण के परिणामस्वरूप ज्ञात हुआ।

इसका शैक्षिक निहितार्थ यह है कि लोककथाओं के माध्यम से भूमिका निर्वाह विधि द्वारा शिक्षण कार्य करवाया जाय तो शिक्षण अर्थपूर्ण, प्रभावी रुचिकर तो बनता, साथ ही विद्यार्थियों में लोककथाओं में निहित मूल्यों का विकास भी होता है। पाठ्यक्रम निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं पाठ्यक्रम निर्माण अभिकरणों ;छब्म्त्ज्ए ैप्त्ज्द्ध के लिए यह एक ध्यातव्य एवं महत्वपूर्ण बिन्दु है।

References:

(A) Books (English)

1.Gupta, N.L. (1986). Value Education : Theory and Practice. Ajmer : Krishna Brothers.

2.Ruhela, S.P. (1986). Human Values and Education. New Delhi : Sterling Publishers Pvt. Ltd.

3.Shrimali, K.L. (1971). The Search for Value in Indian Education. New Delhi : Vikas Publications.

4.Agrawal, Y.P. (1990). Statistical Method Concepts, Application and Computation. New Delhi : Sterling Publishers Private Limited.

5.Arya, Donald Jacob, S. (1967). Introduction to Research in Education. New York : 6.Halt Ri भट्टाचार्य, शान्ति (1965). राजस्थान की लोककथाएँ. दिल्ली : राजपाल एण्ड संस।

7. देथा, विजयदान (1954). वांता री फूलवारी. भाग–1–5,7 जोधपुर : रूपायन संस्थान।

8. गुप्त, नत्थुलाल (1987). मानव मूल्यों की खोज. नागपुर : विश्वभारती प्रकाशन।

9. जैन, यशपाल (1978). सुबोध साहित्यमाला : भारतीय लोककथाएँ. नई दिल्ली : सस्ता साहित्य प्रकाशन।

10. शर्मा, आर.ए. (2008). मानवमूल्य एवं शिक्षा. मेरठ : आर. लाल बुड डिपो।

11. शर्मा, आर.के; दुबे, श्रीकृष्ण (2007). मूल्य शिक्षण. आगरा : राधा प्रकाशन मंदिर।